विद्या सर्वस्य भूषणम
WELCOME

रूपरेखा

प्रस्तावना

अर्थ

परिभाषा

किशोरावस्था के लक्षण

किशोरावस्था में सांवेदिक अस्थिरता का कारण

↓

किशोरावस्था में आने वाली समस्या

↓

किशोरावस्था के समस्या का समाधान

↓

निष्कर्ष

प्रस्तावना

बाल विकास की तीसरी अवस्था किशोरी अवस्था है जो कि बाल्यवस्था के अंत से प्रारंभ होती है तथा प्रौढ़वस्था के प्रांरभ में समाप्त हो जाती है अपनी विशिष्ट प्रकृति एवं महत्व के कारण जहां शैशवावस्था जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल के नाम से बाल्यवस्था को जीवन का अनोखा काल के नाम से संबोधित किया जाता है। वहां किशोरअवस्था को जीवन का सबसे कठिन काल माना जाता है। किशोरावस्था में किशोर बालक के व्यक्तित्व के विभिन्न जैसे– शारीरिक, मानसिक,संवेगात्मक तथा सामाजिक में ऐसे कांतिकारी होते है, जिसके कारण किशोरावस्था को एक नया जन्म की संज्ञा देते है।

अर्थ

किशोरावस्था आंगल, भाषा के एडोलेसेन्स नामक शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है इस शब्द की उत्पत्ति एडोलेसियर नामक शब्द से हुई है जिसका अर्थ है परिपक्वता की ओर बढ़ना। इसे तूफानी अवस्था भी कहां जाता है।

परिभाषा

1. ब्लेयर जोन्स एवं सिम्पसन के अनुसार,” किशोर व्यक्ति के जीवन में वह काल है जो बाल्यवस्था के अंत में प्रांरभ होता है और युवावस्था प्रारंभ में समाप्त होता है।“

2. जर्सील्ड के अनुसार,” किशोरावस्था का तात्पर्य उस अवस्था से है जिससे एक विकासशील व्यक्ति बाल्यवस्था की ओर संक्रमण प्रारंभ में समाप्त होता है।“

किशोरीवस्था के लक्षण:–

01) **स्वतंत्रता:–** शारीरिक मानसिक और सामाजिक परिपक्वता से गुजरने की प्रकिया से गुजरते हुए किशोरावस्थामें स्वतंत्र रहने की प्रकृति जागृत होती है,जिसमें वे अपने आपको प्रोढ़ समाज से दूर रखना प्रारंभ करते है। आधुनिक युग के किशोरे अलग रूप से ही अपनी संस्कृति का नाम दिया जा सकता है।

02) **पहचान:–** किशोर हर स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाने के लिए संघर्ष करते है वे अपनी पहचान बनाये रखे रहने के लिए लिंग भेद तथा अपने को अन्य से उच्च एवं योग्य दर्शाने के प्रयास में होते है।

03) **घनिष्ठता:–** किशोरवस्था के दौरान कुछ आधारभूत परिवर्तन होते है। ये परिवर्तन अधिकतर यौन संबंधों के क्षेत्र के होते है, किशोरों में अचानक विपरीत लिंग के प्रति रूचि उत्पन्न होती है। वे आकर्षण एवं प्रेम के मध्य अंतर स्पष्ट नहीं कर पाते और मात्र शारीरिक आनंद एवं संतुष्टि के लिए सदैव भटकते रहते है।

किशोरावस्था में सांवेदिक अस्थिरता के कारण

- ❖ तीव्र एवं विषम् विकास।
- ❖ सही ज्ञान एवं अनुभव की कमी।
- ❖ स्पष्टता का अथवा निश्चितता का अभाव।
- ❖ संघर्षकाल
- ❖ मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण का अभाव।

किशोरावस्था में आने वाली समस्या

01) परिवार से संबंधित समस्याः– कुछ किशोरों की पारिवारिक पृष्ठभूमि संतोषजनक नहीं होती उनके परिवार में अनेक परेशानियां जैसे – माता या पिता की मृत्यु का हो जाना, परिवार में निर्धनता, बेरोजगारी, परिवार के लोगों का किशोरों को उपर्युक्त समय न दे पाना। उसके समस्याओं से परिचित न होना इन सब कारणों के कारण किशोरों को कई प्रकार के समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

02) स्कूल एवं महाविद्यालय से संबंधितः– किशोरों को अपने स्कूल एवं कॉलेज में भी कुछ परेशानियां जैसे विषय पढ़ाई में रूची का न होना, शिक्षक की कमी, शिक्षक द्वारा विद्यार्थी पर ध्यान न देना, परेशानी होने पर उपयुक्त चर्चा न करना स्कूल एवं महाविद्यालय में आवश्यक सुविधाओं की कमी ऐसी कुछ समस्याओं का सामना एक किशोर को अपने स्कूल और कॉलेज में करना पड़ता है।

03) कैरियर एवं भविष्य की समस्याः– किशोरो की समस्या उनके भविष्य और केरियर से संबंधित होती है जब किशोरों को अपनें भविष्य और कैरियर के संबंध में उचित मार्गदर्शन एवं परामर्श नहीं मिलता या किसी प्रकार का मार्गदर्शन या प्रशिक्षण नहीं मिलता है तो ऐसी स्थिति में किशारों को अपने भविष्य एंव कैरियर की अनिश्चितता एवं चिंता बनी रहती है।

04) स्वतंत्रताः– किशोरावस्था में किशोर आजादी चाहते है। वे बाहर अपने मित्रों के साथ घुमना–फिरना चाहते है। वे अपनी इच्छाओं को अपनी इच्छानुसार पूरा करना चाहते है। जिससे समाज और परिवार के लोग उन पर अनेक प्रकार के समस्याएं देते है। इस तरह अनेक प्रकार के समस्याएं जिससे किशोरों को अपने परिवार और शिक्षक के द्वारा जितनी स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। उतनी नहीं मिल पाती।

किशोरावस्था में आने वाली समस्या का समाधान

01) किशोरों की परेशानी को माता–पिता के आमने सामने बैठकर हल करने का प्रयत्न करना फिर उनकी परेशानी को जानकर उचित मार्गदर्शन, परामर्श प्रशिक्षण देना चाहिए।

02) माता–पिता और शिक्षक का व्यवहार किशोरों के प्रति मि़त्रवत होना चाहिए एवं किशोरों को स्वयं में आत्मनिर्भर विकसित करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

03) किशोरों में आवश्यक प्रतिबंध नहीं लगाना चाहिए। अनावश्यक रूप से प्रश्न नहीं पूछना चाहिए उन्हें सीमित मात्रा में उचित मार्गदर्शन देना चाहिए।

04) समाज को भी किशोरों के उपर अनावश्यक एवं बातपूर्वक दबाव नहीं बनाना चाहिए। जो नियम आज की परिस्थिति के अनुसार हो उन्हें वो लगाना चाहिए।

निष्कर्ष

किशोरावस्था ऐसी अवस्था है जो कि बाल्यावस्था के अंत से प्रांरभ होती है तथा प्रौढ़अवस्था के प्रांरभ में समाप्त होती है किशोरावस्था को ही तूफानी अवस्था भी कहां जाता है। इस अवस्था में अनेक मानसिक एवं सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है इस अवस्था में बालक आकर्षण एवं प्रेम के मध्य अंतर स्पष्ट नहीं कर पाते किशोरावस्था में आने वाली विभिन्न समस्याओं का समाधान माता पिता एवं शिक्षकों के द्वारा उचित मार्गदर्शन से संभंव है।

THANK YOU!